

इस्लाम प्रश्न और उत्तर

जनरल पर्यवेक्षक : शैख मुहम्मद सालेह
अल-मुनज्जिद

7747 - हम “ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह” कब कहेंगे?

प्रश्न

कृपया मेरे लिए स्पष्ट करें :

1. “ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम” का क्या अर्थ है।
2. इसपर एक साधारण टिप्पणी।
3. हम इसे कब कहेंगे?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

“ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह” का अर्थ है :

अल्लाह के सामर्थ्य (तौफ़ीक़) के बिना पाप से बचने की शक्ति और नेकी करने की ताक़त नहीं है। यह बंदे का अल्लाह के सामर्थ्य और समर्थन के बिना किसी भी चीज़ को करने में अपनी अक्षमता व असमर्थता को स्वीकार करना है। जहाँ तक उसकी अपनी शक्ति, गतिविधि और ताक़त की बात है, तो वह कितनी भी महान क्यों न हो, वह अल्लाह की सहायता के बिना बंदे के किसी काम की नहीं है, जो अपनी सारी रचनाओं से ऊपर है, जो सबसे महान है उसके साथ कोई भी चीज़ महान नहीं है। चुनाँचे हर बलवान व्यक्ति अल्लाह की शक्ति के सामने कमज़ोर है, तथा हर महान व्यक्ति उस महिमावान् की महानता के सामने छोटा और कमज़ोर है।

यह वाक्य उस समय कहा जाता है जब किसी व्यक्ति पर कोई गंभीर मामला आ पड़े, जिसे वह करने में सक्षम न हो, या उसके लिए उसे करना बहुत मुश्किल हो। (शैख सअद अल-हुमैयिद)

जिन अवसरों पर इस वाक्य का उच्चारण किया जाता है, उनमें निम्नलिखित हैं :

- जब रात को नींद से जागे :

जनरल पर्यवेक्षक : शैख मुहम्मद सालेह
अल-मुनज्जिद

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، الْحَمْدُ لِلَّهِ، وَسُبْحَانَ اللَّهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

2 / 4

इस्लाम प्रश्न और उत्तर

जनरल पर्यवेक्षक : शैख मुहम्मद सालेह
अल-मुनज्जिद

अक्बर, अल्लाहु अक्बर" कहे। फिर वह "ला-इलाहा इल्लल्लाह" कहे, तो वह व्यक्ति भी "ला-इलाहा इल्लल्लाह" अपने दिल से कहे, तो वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा।" इसे मुस्लिम ने अपनी सहीह (हदीस संख्या: 385) में रिवायत किया है।

- जब वह अपने घर से निकले

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्होंने कहा : अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

“जो व्यक्ति - अपने घर से निकलते समय - कहे :

بِسْمِ اللَّهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

“????????????, ?????????, ??? ????? ????????????? ????? ??????????”

(अल्लाह के नाम के साथ, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया, अल्लाह की मदद (सामर्थ्य) के बिना न किसी चीज़ से बचने की ताक़त है और न कुछ करने का साहस).

तो उससे कहा जाता है : तुम (अपने शोक व चिंता के लिए) काफी कर दिए गए, तुम्हें बचा लिया गया और तुम्हारा मार्गदर्शन किया गया। (यह सुनकर) शैतान उससे दूर हट जाता है।” इसे तिर्मिज़ी ने अपनी सुनन (हदीस संख्या : 3426) में रिवायत किया है। तथा अबू ईसा ने कहा : यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, हम इसे केवल इसी इस्नाद के माध्यम से जानते हैं। तथा देखें अल-अल्बानी की “सहीह अल-जामि” (हदीस संख्या : 6419)।

तथा अबू दाऊद ने इसे अपनी सुनन (हदीस संख्या : 5095) में रिवायत किया है, और यह वृद्धि की है : “तो एक अन्य शैतान उससे कहता है : तुम्हारा उस आदमी पर कैसे वश चलेगा जिसे मार्गदर्शन किया गया, किफ़ायत किया गया और बचा लिया गया”

- नमाज़ के बाद

अबू अज्जुबैर से वर्णित है कि उन्होंने कहा : अब्दुल्लाह बिन अज्जुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) प्रत्येक नमाज़ से सलाम फेरने के बाद कहा करते थे :

इस्लाम प्रश्न और उत्तर

जनरल पर्यवेक्षक : शैख मुहम्मद सालेह
अल-मुनज्जिद

لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وحده لا شريك له، له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قديرٌ، لا حولَ ولا قوةَ إِلَّا بالله، لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، ولا نعبدُ إِلَّا
إِيَّاهُ، له النِّعْمَةُ وله الفضلُ، وله الثَّنَاءُ الحَسَنُ، لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مخلصين له الدِّين ولو كَرِهَ الكافرون

(22 222222 222222222222 222222 22 22222 2222, 22222 22222222 2 22222 222222 222222 2222 22222222
222222 222222, 22 2222 2222 2222222222 2222222 222222222222, 22 2222222 22222222222222, 2222 22222222
2222222 2222222222, 22222222222222 2 22222 2222222222, 2 22222222222222 2222, 22 2222222 22222222222222
222222222222 22222222222 2-22 2222222 22222222222)

अर्थात् अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए बादशाहत है और उसी के लिए सभी प्रकार की प्रशंसा है और वह सब कुछ करने में सक्षम है। अल्लाह की तौफीक के बिना किसी भलाई के करने की ताकत है न किसी बुराई से बचने का सामर्थ्य है। अल्लाह के सिवा कोई सच्चा उपास्य नहीं, हम केवल उसी की उपासना करते हैं, उसी की सब नेमतें हैं और उसी का सब पर उपकार है, उसी के लिए समस्त अच्छी प्रशंसाएँ हैं, अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, हम उसी के लिए धर्म (आज्ञाकारित) को खालिस व विशुद्ध करने वाले हैं, भले ही यह बात काफिरों को बुरी लगे।” तथा उन्होंने कहा : अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक नमाज़ के बाद इन्हीं शब्दों के द्वारा तहलील (अल्लाह का गुणगान) करते थे।” - इसे मुस्लिम ने अपनी सहीह (हदीस संख्या : 594) में रिवायत किया है।